।। द्वितीय अध्याय ।।

-=:: शेवड़ेजी के उपन्यासों का अल्प परिचय ::=-

और शेवड़ेजी की साहित्य संपदा

हिंदी में साहित्य के अनेक रूप पाए जाते हैं । कुछ लोगों ने इन अनेक विधाओं में से किसी एक विधा को अपनाकर अपना एक विशिष्ठ श्रेष्ठ स्थान बना लिया हैं । लेकिन बहुमुखी प्रतिभा पाकर इन समस्त विधाओं को अपनानेवाले साहित्यकार बिरले ही होते हैं । श्री.अ.गो.शेवड़े इसीतरह के साहित्यकार हैं । जिन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं को अपनाया है और उसमें सफलता भी पाई हैं । कथा, उपन्यास, निबंध, अनुवाद और पत्रकारिता जैसी विधाओं में उनका साहित्य अत्यंत सफल और लोकप्रिय रहा है ।

श्री. शेवड़े बहुमुखी प्रतिभा संपन्न उपन्यासकार हैं । उनके विविध दृष्टिकोण हर एक उपन्यास में व्यक्त हुए हैं । स्वयं शेवड़ेजी कहानी की अपेक्षा उपन्यास लिखना अधिक पसंद करते थे । क्यों कि उपन्यास का कॅनवस बड़ा होता है । कहानी का दायरा बड़ा सीमित होता है । किसी एक ही घटना का वर्णन, एक विशिष्ट प्रभाव का ही अंकन कहानी में हो सकता है तो उपन्यास कई घटनाओं का, कई छोटी छोटी कथा-धाराओं का समुच्चय होता है । चरित्र चित्रण का पूरा-पूरा अवसर होता है । उपन्यास जीवन की पूर्ण झाँकी है इसमें जीवन का या किसी समस्या का चित्रण विस्तारपूर्वक किया जाता है । उनके उपन्यासों में आदर्शवाद और यथार्थ का उत्कृष्ट समन्वय है । पात्रों का चरित्र चित्रण मनोवैज्ञानिक ढंग से किया गया है । उपन्यासों की कथा वस्तु रोचक एवं कुतूहलपूर्ण है । और सुगठित एवं सरल कथावस्तु होते हुए उपन्यासों की कथा में रोचकता है । उपन्यासों में शिल्प-योजना में नवीनता नजर आती है । भाषा शैली उपन्यासों के विषयों के अनुसार हैं । हर उपन्यास उद्देशपूर्ण और सफल रहा है । विनय मोहन शर्मा का कहना है कि, "शेवड़ेजी ने अपने उपन्यासों में नए प्रयोग नहीं किये, क्यों कि उनका

.....14/-

विश्वास है कि साहित्य, यदि वह सचमुच साहित्य है तो, अपनी अभिव्यक्ति के लिए किसी समसामाजिक शिल्प-प्रयोग की अपेक्षा नहीं रखता । उपन्यास यदि अपने पाठक को प्राकृत जीवन से अवगत करा उसे उद्वेलित करा देता है तो वह "सफल" कहा जा सकता है ।"[1]

उपन्यासकार के रूप में :

हिंदी उपन्यास साहित्य में शेवड़ेजी के ग्यारह उपन्यास सफल एवं लोकप्रिय रहे हैं । इन उपन्यासों के अनुवाद गुजराथी, में प्रकाशित हो चुके है । मलयालम, कन्नड, तेलुगु, सिन्धी, मराठी, बंगला भाषाओं में भिन्न भिन्न उपन्यास प्रकाशित हुए हैं । कुछ रेडियो नाटक तथा अंधों के लिए ब्रेल-लिपि में भी छाप चुके हैं । उनके बहुत कुछ उपन्यास भिन्न भिन्न साहित्य परिषदों, शासन, संस्थाओं तथा प्रदेशों से पुरस्कृत एवं सम्मानित हुए हैं । विशेषतः "ज्वालामुखी" नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया की ओर से भारतीय संविधान में उल्लेखित सभी चौदह भाषाओं में अनुवादित हुआ है । इसका अंग्रेजी अनुवाद स्वयं लेखक ने "द वोल्कैनो" नाम से करते हुए न्यूयॉर्क (अमेरिका) से इसे प्रकाशित किया है ।

शेवडेजी के इन ग्यारह उपन्यासों को हम रचनाकालानुसार विभाजित कर सकते हैं ।

अ)	स्वातंत्र्यपूर्व उपन्यास	–	1. "ईसाईबाला"	(1930) ई.
ब)	स्वातंत्र्योत्तर उपन्यास	–	2. "निशागीत"	(1950) ई.
		–	3. "मृगजल"	(1949) ई.
		–	4. "पूर्णिमा"	(1950) ई.
		–	5. "ज्वालामुखी"	(1956) ई.
		–	6. "मंगला"	(1958) ई.
		–	7. "भग्नमंदिर"	(1960) ई.
		–	8. "अधूरा सपना"	(1959) ई.

.....15/-

क) साठोत्तरी उपन्यास – 9. "इंद्रधनुष्य" (1976) ई.

– 10. "कोरा कागज" (1975) ई.

– 11. "अमृत कुंभ" (1978) ई.

1. ईसाईबाला :

सन 1932 में शेवडेजी ने "ईसाईबाला" उपन्यास लिखकर उपन्यास विधा में अपना नाम रोशन कर दिया । यह उनकी प्रथम औपन्यासिक कृति हैं । इस समय शेवडेजी असहयोग आंदोलन के कारण शिक्षा – दीक्षा का बहिष्कार कर राजनीति में प्रवेश कर चुके थे । गाँधीजी की सांप्रदायिक एकता की बातों से वे प्रभावित हो चुके थे । इसी समय आंतरजातिय विवाह की बहस समाज में जोरों से शुरू थी । मगर प्रगति की बात सिर्फ विचारों तक ही सीमित थी । इसी कारण सांप्रदायिक तनाव भी उत्पन्न होते थे । इसी वातावरण का प्रभाव "ईसाईबाला" में दिखाई देता है ।

श्री. विनयमोहन शर्माजी ने इसे "रुमानी, मीठीसी" कहानी कहा है । इसमें तत्कालीन समाज का दर्शन होता है । उस युग की परिस्थितियाँ तथा गाँधीवाद की झलक इसमें दिखाई देती है । गाँधीजी के आदेशानुसार शेवड़ेजी एक वर्ष कॉलेज छोडकर स्वातंत्र्य संग्राम में सक्रिय शामिल हुए थे । गिरफतार भी हो चुके थे । इसी अनुभवों का चित्रण "ईसाईबाला" में हैं ।

प्रस्तुत उपन्यास की नायिका एक "ईसाई" युवती है । नायक एक आदर्शवादी युवक है । राष्ट्रीय आंदोलन के वे दोनों सक्रिय कार्यकर्ता हैं । दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हैं और विवाह भी कर लेते हैं । मगर यह आंतर जातीय विवाह समाज सम्मत नहीं है इसलिए दोनों समाजव्दारा बहिष्कृत किये जाते हैं । फिर भी वे दोनों अपनी निष्ठाएँ और इरादों के प्रति अड़िग रहते हैं । राष्ट्रीय संग्राम में, त्याग और आदर्श के बल पर वे समाज के सामने आदर्श की स्थापना करते हैं । इससे समाज का हृदय परिवर्तन होता

.....16/-

है और वही समाज उन्हें आशीर्वादों सहित स्वीकृत करता है ।

शेवडेजी की यह प्रथम कृति एक रोचक प्रेम-कहानी होते हुए भी "भारतीय युवकों को राष्ट्रीय बल और बलिदान की प्रेरणा देती है ।"[2] इसमें "ईसाईबाला" और "प्रकाश" का चरित्र-चित्रण अत्यंत निखरा हुआ है । राष्ट्रप्रेम, स्वतंत्रता और एकता उस समय की जरूरत थी इस परिस्थिति में आंतरजातिय विवाह को दिखाकर शेवडेजी ने सांप्रदायिक एकता को बल दिया है । इसमें जातियता के विरुध्द आवाज उठायी गई है ।

शेवडेजी का यह उपन्यास उद्देश्य और आशय की दृष्टि से सफल रहा है । जिसे 1933 में सी.पी.एण्ड बरार लिटररी अकादमी से पुरस्कृत किया गया है । गुजराती में "स्वप्नसिध्दी" शीर्षक से इसका अनुवाद भी हुआ है ।

2. **निशागीत : (1948)**

शेवडेजी की यह दूसरी कृति है जिसमें तत्कालीन समाज के विषाक्त वातावरण में उदात्त और सुरुचिपूर्ण प्रेम का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है । उपन्यास का नायक मधुसूदन एक सेवाभावी डॉक्टर है जो बचपन से ही डाक्टर बनकर माँकी इच्छानुसार ग्रामीण इलाके में नारी-जाती की सेवा कर रहा है । उपन्यास की नायिका सुशीला एक बाल विधवा है जो नर्स बनकर समाज की सेवा कर रही है । मधुसूदन नर्स सुशिला को चाहता है मगर नर्स सुशीला इसे अस्वीकार करती हैं क्यों कि दोनों के उम्र और सौंदर्य में अंतर हैं । लेकिन एक बारूद विस्फोट के कारण मधुसूदन जवानी की प्रगति काल में ही प्रणय भंग, दृष्टि नाश और अपकीर्ति से आहत होता है । ऐसी विपदावस्था में प्रधाना-ध्यापिका पद्मा उसकी बहन की तरह सेवा करती है । इधर सुशीला भी जान जाती है कि वह डाक्टर मधुसूदन के बिना नहीं रह सकती । इसलिए वह वापस उसके पास आ जाती है । और मधुसूदन को वह अपनाती है । दोनों नागपुर छोडकर अपने छोटे से गाँव में आकर रहते हैं । "नर्स सुशीला सुबह शाम रोगियों की सेवा करती है, दिन में खेती बाड़ी की देखभाल और संध्या को अपने आराध्य की सेवा करती है ।"[3]

.....17/-

एक अंधा प्रेमी है और दूसरी प्रणयदग्ध प्रेमिका । सुशीला अपने प्रियतम की सेवा कर ऊबती नहीं । यह सच है कि प्रीति की भीत्ति मोह या शारिरिक आकर्षण पर होती है वहाँ ऊब होना आवश्यक है, पर जहाँ वह भित्ति हृदय, आत्मा और ममत्व है, त्याग और संयम उसके रथचक्र है वहाँ ऊब नहीं होती, यह बात दोनों अपने प्रेम से सिध्दकर देते हैं । शेवडेजी के अब तक के उपन्यासों में यह एक सर्वश्रेष्ठ कृति है । कर्तव्यनिष्ठ, जनसेवी डॉक्टर तथा नर्स पर लिखा गया सामाजिक, मनोवैज्ञानिक उपन्यास है । "इसकी सफलता का मुख्य कारण हो सकता है - वस्तु की सरलता, सरसता कथा शैली की रोचकता और सरल प्रवाहमयी भाषा का सौंदर्य ।"[4]

प्रेम के आदर्श रूप के साथ-साथ : प्रदेश के अविकसित प्रदेश की स्वातंत्र्य-पूर्वकालीन सामाजिक स्थिति का चित्रण कर लेखक ने तत्कालीन वातावरण को सजीव बनाया है । इसमें त्याग, निस्वार्थ प्रेम, सेवाभाव के आदर्श गुणों से विभूषित भारतीय नारी को चित्रित किया है । शिल्प, एंव शैली की दृष्टि से "ईसाईबाला" से यह प्रौढ़तर रचना है ।

3. मृगजल : (1947)

निशागीत की तुलना में कलात्मक ढंग "मृगजल" में अधिक दिखाई देता है । "मृगजल" उपन्यास सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा गाँधीवादी विचारों का समर्थन करनेवाला चरित्रचित्रणप्रधान उपन्यास है । इसमें कलाकार का जीवन दर्शन कराया है । अशोक नीलकंठ एक प्रसिध्द चित्रकार है । उसके चित्रों को देखकर धनी परिवार की मायादेवी उसपर आसक्त होती है और उसे अपनी अमीरी के बलपर अपनाना चाहती है मगर अशोक इस प्रस्ताव को मान्य नहीं करता । उसके बाद उसके जीवन में मरियम नामक ईसाई युवती आती है लेकिन वह जीवनवादी है तो अशोक कलावादी । उसे छोड़कर अशोक न्यायाधीश की पुत्री अरूणा से शादी करता है । मगर मरियम की निष्ठा उसे निरंतर बेचैन करती रहती है । ऑपरेशन में पुनर्जन्म होने के बाद मरियम उससे मिलती है और

.....18/-

शेवडेजी के शब्दों में कहा जाय तो, "इसमें भारतीय स्वातंत्र्य की प्रसव-वेदना का चित्रण है । आनेवाली पीढ़ियाँ जान सके कि जिस स्वतंत्रता का हम उपभोग कर रहे हैं उसकी हमें क्या कीमत चुकानी पड़ी और उसे टिकाने के लिए, मजबूत बनाने के लिए हमें क्या करना चाहिए, इस पर सोचे यह इसका उद्देश्य है ।"[9]

उपन्यास का नायक व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज, राष्ट्र की भलाई सोचता है, यह उसके चरित्रगत विकास का द्योतक है । इसमें स्वयं शेवड़ेजी का ही प्रतिबिंब दिखाई देता है । नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा भारतीय संविधान में उल्लेखित सभी चौदह भाषाओं में इसे अनुदित किया गया है । "ज्वालामुखी" की असीम सफलता का यह द्योतक है ।

6. मंगला : (1957)

प्रेम, संगीत और जीवन दर्शन पर आधारित यह उपन्यास एक अंधे संगीतकार की सुरीली, दर्दभरी कहानी है । उपन्यास का नायक पंड़ित सदानंद एक अंधा संगीतज्ञ है । वह गरीब है पर निष्क्रिय नहीं है । समाज में उसका स्थान अच्छा है । वह सूर संगीत विद्यालय का प्रिंसिपल है । मंगला जैसी स्वरूपवान स्त्री से उसका विवाह हो जाता है । वह मंगला मंगल ग्रह की अवकृपा से पीड़ित है । अंधश्रध्दा के कारण समाज में उसकी निरंतर उपेक्षा होती रहती है । किसी पंड़ित ने उसके उध्दार का एक उपाय बताया कि किसी अपंग से उसका ब्याह हो जाना चाहिए और पं.सदानंद इसके योग्य बताते हैं । इसलिए अंधा सदानंद और स्वरूप सुंदरी मंगला "मणि-कांचन" योग है । विवाह के पश्चात मंगला का विद्रोह प्रकट होता है । क्यों कि यह विवाह स्वेच्छा से नहीं परिस्थिति की मजबूरी के कारण हुआ था । अंधे पति की ओर से अपने सौंदर्य की उपेक्षा मंगला को असहनीय होती है और वह चंद्रकान्त नामक एक धनी युवक की ओर आकर्षित होती है । दोनों अंधे सदानंद को धोखा देकर बंबई जाते हैं । मंगला को पश्चाताप होता है और वह मृणालिनी को खत लिखकर उसके व्दारा सदानंद से माफी माँगती है । सदानंद भी मंगला को माफ कर उसे अपनाते हैं ।

.....21/-

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

इसी तरह "मंगला" में पात्र और प्रसंग का विशेष विस्तार नहीं है । परंतु छोटी सी व्यवस्थित कथावस्तु को सुंदर शैली में गूँथा है और यही उपन्यास की विशेषता है । इस छोटे से उपन्यास व्दारा शेवडेजी ने अनेक सामाजिक प्रश्नोंको हमारे सामने प्रस्तुत किया है, जैसे अनमेल विवाह, झूठी परंपरा तथा भविष्य के प्रति अंधश्रध्दा, नारी की परावलंबी वृत्ति तथा धन का प्रभाव आदि । "लेखक ने "घर-बाहरे" इस रविन्द्रनाथ के मानवतावादी दृष्टि से मंगला का हृदय परिवर्तन करते हुए नारी की ओर सहानुभूति से देखा है और गलती से हुए पाप को क्षमाके योग्य बताया है । पाप से घृणा करते हुए पापी से प्रेम करते हुए चरित्र भ्रष्ट मंगला को मंगलमय बनाया है।"[10]

इस उपन्यास में लेखक ने बड़ी सहृदयता से अंधे सदानंद के मन का चित्रण किया गया है । इसे अंधोंकी गीता कहा गया है तथा अंधों की ब्रेल-लिपि में भी वह छापा गया है ।

7. भग्नमंदिर : (1960)

"ज्वालामुखी" की सफलता के बाद लिखा शेवडेजी का यह दूसरा राजनीतिक उपन्यास है - भग्नमंदिर । इसमें काँग्रेसी मंत्रीमंडल, तत्कालीन राजनीति और पत्रकारिता के गाँधीवादी आदर्श को कलात्मक रीति से प्रस्तुत किया गया है ।स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद जो अपेक्षाएँ थी उनका कैसे -हास हुआ । "प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित किया गया है कि स्वतंत्रता के बाद जो अपेक्षाएँ थी उनका कैसे -हास हुआ ।"

स्वतंत्रता पाने के बाद देश कैसा हो इस विषयमें कुछ स्वप्नों को साकार करने की दृष्टि से कुछ विधायक सुझाव प्रस्तुत करना इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य है । शेवडेजी ने स्वयं इस परिस्थिति को देखा है और स्वतंत्रता सेनानी होने के कारण राजनीतिज्ञों से संपर्क भी था । इसलिए इस उपन्यास में यथार्थ चित्रण हुआ है । जो स्वयं लेखक आत्मकथात्मक शैली से प्रस्तुत करते हैं ।

.....22/-

धनंजय और पूरणचंद्र जोशी दो पत्रकार है तथा देशभक्त पारतंत्र्य काल में एकसाथ जेल में रहते हैं और मित्र बनते हैं । 15 अगस्त को स्वतंत्रता मिलने के बाद पहला मंत्रीमंडल बना और साथ ही साथ प्रदेश के मंत्रीमंडल भी बनें । पूरणचंद्र जोशी विशाल प्रदेश के मुख्यमंत्री बनते हैं और गीता तथा धनंजय को भी अपने मंत्रीमंडल में सम्मिलित होने को आमंत्रित करते हैं । लेकिन ये दोनों इन्कार कर देते हैं । तब पूरणचंद्र जोशी पुराने दैनिक को नया "युगान्तर" नाम देकर उसे विशाल प्रदेश का मुख्य पत्र बनाते हैं, और धनंजय को उसका मुख्य संपादक । धनंजय सच्चा गाँधीवादी होने के कारण अपने पत्र में वह किसी की भाटगिरी नहीं करता । इधर पूरणचंद जोशीजी अपने राज्य में भ्रष्टाचार का बड़े जोरों से साथ देते दिखाई देते हैं । अपने सत्ता के बल से खदाने, ठेके, एजन्सियाँ आदि पर एकाधिकार करना चाहते हैं । धनंजय सत्ता का यह दुरूपयोग देखकर अस्वस्थ होता है और मूल तत्वों में भिन्नता आने के कारण जोशी और धनंजय, दोस्त से दुष्मन बन जाते हैं । पूरणचंद जोशी धनंजय को खात्म करने का भी प्रयत्न करता है । अंत में गाँधीवादी दृष्टिकोण अपनाकर चलनेवाले धनंजय की ही जीत होती है और पूरणचंद जोशी मंत्रीपद से हटा दिये जाते हैं, और जोशीजी का अंत भी हो जाता है । इस प्रकार व्यक्तिगत स्पर्धा राष्ट्रीय पृष्ठभूमि पर खात्म होती है ।

इस उपन्यास की तुलना यशपाल के "झूठा-सच" अजय की डायरी" (डॉ.देवराज) "धने और बने" (ले. भालभद्र ठाकुर) के उपन्यासों से की गई है । "भग्नमंदिर" स्वतंत्रता के बाद बदलती हुई पृष्ठभूमि पर लिखा गया उपन्यास है । इसकी सबसे बड़ी खूबी सादगी और यथार्थ की पकड़ और चरित्रों की वास्तविकता है ।"[11]

8. परिक्रमा : (अधूरा सपना)

शेवडेजी का यह एक लघु उपन्यास है । लघु उपन्यास की सारी विशेषताएँ इसमें नजर आती है । इस उपन्यास की कल्पना लेखक की अपनी पत्नीकी एक सहेली को रेडियो पर गाये हुए करुणार्द्र भजन से मिली है । उपन्यास का नायक गिरीश एक संन्यासी

.....23/-

है और नायिका सुहासिनी अत्यंत सुंदर तरुणी है । लेकिन प्रेम भंग हो जाने के कारण गिरीश संसार से विरक्त बनता है । अपने अहं को पहुँची ठेस का वह बदला लेना चाहता है । प्रेम के अधूरे सपने को वह फिर से पाने के लिए अपनी जिंदगी गुजारता रहता है । बारह वर्ष तक वह अपनी प्रिया को नहीं भूलता । लेकिन जब उससे वह मिलता है, तब उसके पति के नाम एक चेक रखकर चला जाता है ।

इस तरह प्रस्तुत उपन्यास में शेवड़ेजी ने "प्रेम की विचित्रता, ताजगी, पागलपन तथा आंतरिक रूप से जलने की "अंह" भावना का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है ।"[12] प्रस्तुत उपन्यास में नारी आदर्श के बारे में एक ठोस और निश्चित विचार उपस्थित करने का प्रयत्न शेवड़ेजी ने किया है । स्वस्थ आदर्शवादी दृष्टि, सरस भाषा में अभिव्यक्ति इस उपन्यास की विशेषता है ।

9. <u>इंद्रधनुष्य</u> : (1966)

शेवडेजी की वैचारिकता का विकासात्मक रूप प्रस्तुत उपन्यास में व्यक्त होता है । "अन्य उपन्यासों के समान इस उपन्यास में भी शेवड़ेजी नारी के प्रति दुविधा के विचार, संघर्ष करते हुए नजर आते हैं ।"[13] इस उपन्यास में नारी को विद्रोही रूप में साकार किया है और नारी जीवन के प्रति एक क्रांतिकारी बदलाव दिखाया है । दूसरी ओर उसे मातृत्व के आदर्श आवरण से ढँकने का भी प्रयत्न किया है । इसतरह आदर्श और यथार्थ का द्वंद्व इंद्रधनुष्य" में खिलता है । नैतिक मूल्यों का जो चहुँमुखी ह्रास हो रहा है उसे इस उपन्यास में अंकित किया गया है । "भग्नमंदिर में राजनीतिक वातावरण के ह्रास का चित्रण है तो "इंद्रधनुष" में शैक्षणिक क्षेत्र की परिस्थितियों का निरूपण कथा-प्रवाह के साथ अनायास ही आ गया है ।"[14] जीवन के राग-विराग का प्रतीक इंद्रधनुष्य है ।

दर्शनशास्त्र के विद्वान डा. ज्ञानशंकर पठन-पाठन, लेखन-चिंतन आदि में व्यस्त रहते हैं । अपनी पत्नी की ओर इस कारण उनका दुर्लक्ष्य होता रहता है । उनकी पत्नी

वीणा मातृत्व की इच्छा से सुनहरे ख्वाबों में खोई रहती है । लेकीन जब उसे सत्य मालूम पड़ता है तब वह अपने को काबू में नहीं रख पाती और अपनी मातृत्व की इच्छा पूर्ति के लिए दलीप के पास आ जाती है । इस समय वीणा अपने आप को सँवर नही पाती । डा. ज्ञानशंकर को भद्रपुर से लौटने पर पत्नी में हुआ परिवर्तन अनुभव करते है लेकिन धोबी को कपड़े देते समय दलीप का रूमाल उन्हें सबूत के रूप में मिलता है । दलीप और वीणा के संबंधों का पर्दाफाश होता है । वीणा इसे कबूल करती है । लेकिन बदनामी के डर से डा. ज्ञानशंकर चुप ही रह जाते हैं । वीणा के साथ वे सक्ती से रहने लगते हैं । लेकिन वे निरंतर बेचैन होते रहते हैं । सौभाग्य से डा. सुमन्त और डा. सुमित्रा उनकी मदत करते हैं और डा. ज्ञानशंकर और वीणा को करीब लाते है । और उनका दाम्पत्य जीवन फिर से शुरू हो जाता है ।

इसतरह "इंद्रधनुष्य" आधुनिक काल का चित्रण करनेवाला एक यथार्थवादी उपन्यास है जो यह दर्शाने का प्रयत्न करता है कि नई विचारधाराओं का संघर्ष पुराने मूल्यों को किस प्रकार चुनौती दे रहा है । " [15] उपन्यास में दांपत्य जीवन की समस्याएँ वीणा और ज्ञानशंकर के द्वारा खूबी से साकार की है । लेखक ने हरएक पात्र को मनोवैज्ञानिक कसौटी पर परखने का प्रयत्न किया है ।

10. कोरा कागज :

एक साहित्यकार के जीवन की सच्ची कहानी "कोरा कागज" में चित्रित हुई है । आत्मकथात्मक शैली यह इसकी विशेषता है । साहित्यकार की आत्मा को वे अपनी निजी अनुभूतियों से जानते थे । शेवड़ेजी का कहना है – " साहित्यकार को तटस्थ वृत्ति से दुनिया परखने की आवश्यकता है । क्यों कि साहित्यकार का स्वधर्म है – साहित्यिक, साहित्य सृजन और उसके जीवन में घटित अन्य बातें साहित्य जीवन के प्रयोग हैं ।" [16]

उपन्यास का नायक है निरंजन, जो एक साहित्यकार है । लेकिन उसके अपने जीवन का प्रारंभ प्रेम भंग से होता है । वह डेप्युटी कमिश्नर बनता है । विवाह भी करता है लेकिन उसकी साहित्यिक आत्मा उसे इस रास्ते से हटाकर बंबई की ओर जाने के लिए उन्मुख करती है । बंबई की विविधता से पूर्ण जीवन पर आधारित "अग्निकंकण" नामक एक सुंदर कहानी वह लिखता है । लेकिन बंबई में भी वह नहीं रह पाता और वह हिमालय के नितर्गरम्य वातावरण में ओंकार स्वामी के आश्रम में चला जाता है । वहाँ "पाषाण और निर्झर " उपन्यास लिखता है । उसकी साहित्यसेवा के कारण प्रधानमंत्री उसे राज्यसभा में सदस्य के नाते नियुक्त करते हैं । लेकिन निरंजन को अपने व्यक्तिगत लेखन कार्य के लिए फुर्सत ही नहीं मिलती । " लेखक के लिए साहित्य सृजन जीवन है । न लिखना मृत्यु "[17] अंत में वह अपर्णा को एक दर्दभरा खत लिखकर चल पड़ता है ।

इसप्रकार हम देखते हैं कि निरंजन के जीवन में रीता रस्तोगी, कपिला वर्मा, अपर्णा, मंजुश्री, वंदना, जयंती जैसी कितनी ही स्त्रियाँ आती है । हर एक का अपना अपना स्वभाव और विशेषता है । लेकिन ओंकार स्वामी निरंजन को प्रेरणा देनेवाला एकमेव व्यक्तित्व दिखाई देता है ।

सारांश "कोरा कागज़" में एक आदर्श लेखक की कसौटी से जीवन और उसके सत्यों और स्वयं लेखन कार्य को भी परखने का प्रयत्न किया गया है । " [18]

11. अमृत कुंभ : (1977)

अपने पूर्ववर्ती उपन्यासों की तुलना में शेवड़ेजी का यह उपन्यास सर्वश्रेष्ठ रहा है । सभी उपन्यासों से अधिक गहरा और व्यापक आशय इसमें रहा हैं । इसका कैनवास विश्वव्यापी बन पड़ा है । इसमें चित्रित दर्शन और चिंतन विश्वव्यापी, सर्वोदयी विचारों से प्रेरित दिखाई देता है ।

"अमृतकुंभ" सत्यकाम और पालीन के मीलन की कथा है । सत्यकाम एक अनाथ युवक है । फिर भी शिक्षा प्राप्त कर वह रैयान की फैक्टरी में बड़ा अधिकारी बन जाता है । इस फैक्टरी के कारण सारा गाँव दूषित एवं पीड़ित है । इसे जानकर सत्यकाम अपने आप को अपराधी समझकर नौकरी छोड़ देता है, और माँ की अंतिम इच्छा के अनुसार भारत भ्रमण के लिए निकल पड़ता है ।

भ्रमण करते वक्त हरपुरा में उसकी भेंट पालीन नामक अमरिकी युवती से होती है । पालीन अमेरिका के हृदयहीन व्यवहार से तंग आकर आत्मशांति की खोज़ में भारत आयी है । सत्यकाम से भेंट होने पर दोनों मिलकर सुखद, सरल तथा आध्यात्मिक शांति का जीवन बीताते हैं । फिर भी दोनों स्थायी शांति की तृप्ती के लिए हिमालय की ओर चले जाते हैं । इस मुख्य कथा के साथ ही हरिपुरा ग्राम के मुखिया की, धन्ना डाकु की उपकथा भी इसके साथ ही चलती है । और इस मानवीय वातावरण के विपरित चित्र बंबई के रेयान फैक्टरी के मालिक अशोक पालिया के घर का वातावरण दिखाते हुए शहरी जीवन का चित्र खींचा है ।

इसतरह "सत्यकाम और पालीन प्रकृति और पुरूष, न्यूयॉर्क और भारत, पश्चिम और पूर्व मिलकर विश्व - बंधुत्व और विश्वशांति का संदेश शेवड़ेजी देते हैं । मानव धर्म विश्वधर्म है और प्रेम उसका मूल है क्यों कि प्रेम ईश्वर का वरदान है ।"[19] म. गाँधी, विनोबा भावे तथा स्वामी विवेकानंद के मानवतावादी विचारों का प्रभाव शेवड़ेजी की इस कृति पर दिखाई देता है । मानवीय मूल्यों के प्रति उनकी आस्था अनन्य एवं गहरी है यही इस उपन्यास व्दारा उन्होंने स्पष्ट किया है । "प्रो. विश्वंभरनाथ उपाध्याय ने "आज की उपन्यास कला" नामक लेख में शेवड़े को स्पष्ट गाँधीवादी लेखक कहा है ।" [20]

उपन्यासकार की ही तरह शेवड़ेजी एक सफल कहानीकार के रूप में भी प्रसिध्द हैं । उनके दो कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं -

1. संगम (1962)

2. संतरों की डाली (1964)

इन संकलनों में शेवड़े तथा उनकी पत्नी श्रीमती यमुनाजी शेवड़े की भी कुछ कहानियाँ संग्रहित है । उनकी कहानियों का वर्गीकरण इसप्रकार किया जा सकता है ।

1. **पारिवारिक कहानियाँ :**

संतारों की डाली, जजसाहब का ओवरकोट, तलाक पत्र, नीला लिफाफा ।

2. **सामाजिक कहानियाँ :**

अंडे के छिलके, सर्कस की लड़की, संजीवनी, चैती का ब्याह, डा.सुनीता ।

3. **मनोवैज्ञानिक कहानियाँ :**

घड़ी की चोरी, अंधा प्रेम, डा.सुनीता, संतरों की डाली, संजीवनी ।

4. **प्रेम कहानियाँ :**

कारा की देवी, प्रतीक्षा, आकाशवाणी का प्रेम, नीला लिफाफा, तलाक का पत्र ।

5. **राजनीतिक :**

चरित्रहीन, कारा की देवी ।

6. **विविध विषयों पर लिखी कहानियाँ :**

आस्तीन का साँप, संगमरवर का पेपरवेट, सुनहरा फौंटन पेन, रेशम की कमीज़, तीन कंकड़ ।

शेवडेजी की ये कहानियाँ घटना प्रधान हैं। उनकी कहानियों में भावों को घटना के माध्यम से व्यक्त किया गया है । उनकी प्रत्येक कहानियाँ में उपन्यासों के समान मानवतावाद तथा आदर्शवाद का ही प्रस्तुतीकरण है । जो स्वाभाविक ढंग से किया गया है ।

.....28/-

यथार्थ की पृष्ठभूमि पर आदर्श का चित्रांकन बड़े ही अनूठे ढंग से किया है । "शेवड़ेजी ने कौतूहल का (सस्पेन्स) समावेश हर कहानी में खूब कौशल से किया है । मानवीय संवेदनाओं (Human Feelings) के प्रति शेवड़े अधिक जागृक हैं ।" [21] शेवड़े ने चरित्रचित्रण भी स्वाभाविक ढंग से किया है । मानवीय वेदनाओं को स्वीकार करते हुए नए मूल्यों को स्थापित करना शेवड़ेजी का मुख्य लक्ष्य है क्यों कि, "उनके पात्र मानव है, जो किसी न किसी रहस्य के अभाव से हमेशा पीड़ित रहे हैं ।" [22]

3. निबंधकार :

उपन्यास, कहानी के अलावा उन्होंने निबंध साहित्य में भी अपनी कलम चलायी उनका "तिसरी भूख" नामक निबंध संग्रह 1955 में प्रकाशित हुआ है ।

4. कुशल संपादक :

श्री. शेवडेजी एक कुशल संपादक के रूप में भी नजर आते हैं । उनके व्दारा चलाये गए पत्र इस प्रकार हैं –

1. इंड़िपेंड़ेंट (1935)
2. नागपुर टाइम्स (1947)
3. नागपुर पत्रिका

5. अनुवादक :

हिंदी लेखन के साथ ही शेवड़ेजी ने कुछ लेखन अंग्रेजी में भी किया है । "ज्वालामुखी" उपन्यास का अंग्रेजी अनुवाद "वोल्कैनो" नाम से प्रसिध्द रहा है । इसीतरह

अन्य अंग्रेजी उपन्यास है -

1. डस्क बिफोर डॉन, ।
2. स्टॉर्म अॅन्ड दि रेनबो ।
3. ए डार्क हॅंगर ।
4. सायलेंट सॉंग ।

निष्कर्ष :

इसतरह हम देखते हैं हि साहित्य की इन विभिन्न विधाओं में शेवड़ेजी ने अपना अमिट प्रभाव, अपने साहित्य सेवाव्दारा निर्माण किया है । उनके साहित्य में आदर्श तथा यथार्थ पाया जाता है । शेवडेजी म. गाँधीजी के जीवन दर्शन से प्रभावित थे. इसलिए उनके विचार हमेशा आदर्श रहे हैं । अपने साहित्य में उन्होंने "सत्यं, शिवं,सुंदरं" का अविष्कार किया है । अपने लेखन में गाँधीवाद, मानवतावाद, नारी कल्याण, जीवन के लिए कला जैसी बातों का समर्थन किया है ।

शेवड़ेजी का उपन्यास साहित्य अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि वे एक बहुआयामी, प्रतिभासंपन्न उपन्यासकार हे । जो विविध दृष्टिकोण हरएक उपन्यास में व्यक्त किये हुए हैं, वे सब भारतीय संस्कृति की हिमायत करनेवाले रूप में चित्रित हुए है । अपने उपन्यासोंव्दारा उन्होंने गाँधीजी के महान संदेशोंका निरूपण किया है । उनके पात्र गाँधीजी के महान आदर्शों के अनुसार चलते हुए दिखाई देते हैं । अपने उपन्यासों में समाज की अपेक्षा मानव का चित्रण उन्होंने सशक्त रूप में किया है । आदर्शवाद का चित्रण यथार्थ की भूमि पर किया है । और इसी कारण उनका साहित्य "जीवन के लिए" दृष्टिकोण अपनाता हुआ दिखाई देता है ।

उपन्यासों व्दारा प्राप्त सफलता उन्हें कहानियोंव्दारा भी प्राप्त हुई हैं । कहानी साहितय में उन्होंने विविध विषयों और शैलियों का निरूपण किया है जो प्रसंगानुकुल, सजीव और मार्मिक है । उनकी अनुभूति विशाल है । उनकी भाषाशैली

भावुक और कोमल है ।

इसीतरह निबंध, अंग्रेजी उपन्यास तथा समाचार पत्रों का संपादन कार्य भी उन्होंने कुशलता से किया और स्वयं मराठी भाषी होते हुए भी राष्ट्रभाषा हिंदी को ही अपनी समस्त साहित्य सेवाएँ अर्पित की है ।

.....31/-

—:: द्वितीय अध्याय ::—

संदर्भ - सूची

1.	संपा. बाँकेविहारी भटनागर, "शेवड़े : व्यक्तित्व, विचार और कृति,"	पृ.66
2.	डॉ. शं.ना. गुंजीकर, "अ.गो. शेवड़े और उनका साहित्य,"	पृ.193
3.	अ.गो. शेवड़े, "निशा-गीत"	पृ.146
4.	डॉ. शं.ना. गुंजीकर, "अ.गो. शेवड़े और उनका साहित्य,"	पृ.202
5.	अ.गो. शेवड़े "मृगजल",	पृ.262
6.	डॉ.शे.ना. गुंजीकर, "अ.गो. शेवड़े और उनका साहित्य,"	पृ.194
7.	- वही -	पृ.198
8.	-वही -	पृ.206
9.	संपा. बाँकेविहारी भटनागर, "शेवड़े : व्यक्तित्व, विचार और कृति,"	पृ.76
10.	डॉ.शं.ना. गुंजीकर, "अ.गो. शेवड़े और उनका साहित्य,"	पृ. 212
11.	- वही -	पृ.218
12.	- वही -	पृ.214
13.	- वही -	पृ.221
14.	संपा. बाँकेविहारी भटनागर, "शेवड़े : व्यक्तित्व, विचार और कृति,"	पृ.78
15.	- वही -	
16.	डॉ.शं.ना. गुंजीकर, "अ.गो. शेवड़े और उनका साहित्य,"	पृ.221
17.	- वही -	पृ.223
18.	- वही -	पृ.224
19.	- वही -	पृ.226,227
20.	- वही -	पृ.190
21.	- वही -	पृ.237
22.	- वही -	पृ.245